

**NEW YEAR
(2011)**

यह जो ३१ दिसंबर है, यह विश्व में जो भक्ति में रुचि नहीं रखते, वे लोग भी मनाने की चेष्टा कर रहे हैं, कि नया वर्ष सुखमय हो और भक्त साधक भी मनाने की चेष्टा कर रहे हैं, कि नया वर्ष सुखमय हो। परन्तु देखा क्या जाता है अधिकांश, कि अभक्तों का जो नया वर्ष मनाना होता है, उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता, अगला वर्ष भी पूर्व की भाँति ही वैसे ही रहता है। और दुर्भाग्य की बात है, कि भक्त भी मनाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु देखा जाता है कि भक्तों का भी..., मेहनत भी सारी रहती है, जप भी करते हैं, अध्ययन करते हैं, सेवा भी करते हैं, परन्तु सुखमय क्यों नहीं रहता? जीवन सुखमय क्यों नहीं रहता? यह बहुत बड़ी विचारणीय स्थिति है। अभक्तों का तो नहीं रहेगा, यह तो समझ आता है, परन्तु भक्त जानते हैं कि श्रीकृष्ण ही आनंद स्वस्य हैं, सेवा भी करते हैं, चेष्टा भी, फिर भी क्यों नहीं रहता, यह मूल प्रश्न है। फिर भी सुखमय जीवन क्यों नहीं रहता? तो आज हम उस जड़ में जाने की कोशिश करेंगे, कि किस कारण से नहीं रहता।

देखिए, ऊपर-ऊपर से काटने से, पते काटने से, branch काटने से कुछ नहीं होगा। जब तक हम मूल में, जड़ में नहीं जाएँगे, तब तक वास्तव में प्रश्नों का उत्तर नहीं प्राप्त होगा। तो मूल क्या है? मूल है स्वयं को पहचानना। यदि हम वास्तविक स्वप्न से गंभीर चिंतन नहीं करेंगे कि- 'मैं हूँ कौन', तो सुख प्राप्ति हमेशा-हमेशा एक अभिलाषा ही रहेगी। हम चाहते हैं सुख प्राप्ति वास्तविकता हो, न की अभिलाषा।

तो मैं कौन हूँ? आप सब यह मानते हैं कि हम पृथ्वी में रहते हैं? कभी कोई बोलता है कि 'मैं पृथ्वी हूँ'? कभी सुना है किसी को बोलते हुए कि, 'मैं पृथ्वी हूँ'? नहीं। थोड़ा और गंभीर चिंतन इसमें करें, तो हम भारत में रहते हैं। कभी बोलते हैं कि, 'मैं भारत हूँ'? थोड़ा और भीतर जाएँ, हम दिल्ली में रहते हैं। हम दिल्ली में रहते हैं। कभी हम बोलते हैं, 'मैं दिल्ली हूँ'? नहीं। अभी हम यहाँ पर हैं, हम तिलक नगर में रहते हैं। कभी हम बोलते हैं, 'मैं तिलक नगर हूँ'? नहीं। और अगर गंभीर जाएँ, हम इस देह में रहते हैं, तो हम कभी बोलते हैं कि, 'मैं यह देह हूँ'? हम तो हमेशा बोलते हैं, 'मैं यह देह हूँ'।

कभी किसी ने नहीं बोला - 'मैं दिल्ली हूँ, मैं भारत हूँ, मैं पृथ्वी हूँ', फिर मैं अमित या विकास कैसे हो जाऊँगा...? और भीतर जाएँ, स्थूल देह के भीतर में रहता हूँ। जैसे मैं,

मैं भारत में रहता हूँ, मैं भारत नहीं हूँ।
 मैं दिल्ली में रहता हूँ, मैं दिल्ली नहीं हूँ।
 उसी प्रकार से, इस अमित के देह में रहता हूँ, मैं अमित नहीं हूँ।

या मैं विकास के सूक्ष्म देह में रहता हूँ। देह में रह रहा हूँ न कहीं पर, सूक्ष्म देह के भी तो मैं भीतर रह रहा हूँ। तो मैं विकास नहीं हूँ। मैं गीता नहीं हूँ। इस बात को समझना होगा, कि हम सब कोई भी unique नहीं हैं। हम सोचते हैं, मैं तो विल्कुल unique हूँ, I am what I am ! यह..., इतना ego, यह सब अहम् की परिभाषाएँ हैं।

वास्तविकता क्या है, मैं क्या हूँ? मैं एक चित्कण हूँ। चित्कण, चेतना का कण हूँ। I am a particle of consciousness..., आत्मा क्या है? कण, लघु है। मैं चेतना का कण हूँ केवल। मैं चेतन हूँ। I am consciousness..., इससे ज्यादा मेरी कोई पहचान नहीं है। आप भी consciousness हैं, आप भी consciousness हैं, आप भी consciousness हैं।

जब हम प्रारम्भ में सृष्टि में आते हैं, तब हम एकदम कोरे होते हैं। अभी भी कोरे ही हैं। परन्तु हम अपने ऊपर अपना, अपनी drawing खुद कर लेते हैं। सफेद sheet के ऊपर जो भी drawing कर ली, वो हम खुद को मान बैठते हैं। जैसे कोई मान बैठा है कि मैं सचिन हूँ, कोई मान बैठा है कि मैं चेतन हूँ। कोई मान बैठा है मैं सरोज हूँ। असलियत क्या है? कि हममें, सबमें किसी में कोई भेद नहीं है, इस बात को समझिए। हममें किसी में भेद नहीं है। हम कोई unique नहीं हैं कहीं से भी। हर एक को लगता है मैं unique हूँ। यह नहीं है वास्तविकता। आप सब यहाँ पर आए हैं, ऐसा देखने में लगता है, कि कोई अपने बच्चों के साथ आया है, कोई..., ऐसे देखने में लग रहा है कोई wife के साथ आया है, ऐसा लग रहा है कोई भाई के साथ आया है। वास्तविकता क्या है? कि न कोई विकास आया, न कोई सचिन आया ! आप आए हो। जैसे अभी मैं आया..., तो Civic में, मैं आया। Civic नहीं आई है। यहाँ जो आया है, क्या लगता है कि मैं अमित आ गया, इसका मतलब Civic आ गई। मैं आया हूँ न, तो मैं कौन हूँ? समझना पड़ेगा अच्छी तरह।

I am just a particle of consciousness...

*You think, you are, what you are thinking !
 You think, you are, what you are thinking !
 But you are not !!!
 You are not what you are thinking...*

आप सोचते हो कि जो मैं अपने बारे में सोच रहा हूँ, वही मैं हूँ। यही बात है? पर वास्तविकता यह नहीं है। जो आप अपने बारे में सोच रहे हो, वो आप नहीं हो। What you think about yourself, that is the greatest lie..., वो सबसे बड़ा झूठ है, जो आप अपने बारे में खुद को सोचते हो। कोई सोचता है, मैं मानसी हूँ। कोई सोचता है, मैं doctor हूँ, कोई सोचता है, मैं businessman हूँ। यही..., यही तो illusion है। भीतर जाना होगा।

एक बार एक स्वामी जी के पास एक आया, जिज्ञासु। उसने बोला, "स्वामी जी मैं मुक्ति चाहता हूँ"। स्वामी ने बोला, "जहाँ से आए हो, वहीं वापस चले जाओ"। तो क्या वे उसे ignore कर रहे हैं क्या? वे सही बोल रहे हैं। जिस रास्ते से आए हो न, ठीक उसी रास्ते से वापस चले जाओ, मुक्त हो जाओगे। किस रास्ते से आए हो? अभी लग रहा है मैं businessman हूँ, दो (२) बच्चों का बाप हूँ। न-न-न...। थोड़ा पीछे जाना। पाँच-दस (५-१०) साल पहले, तब आपकी शादी हुई थी। थोड़ा और पीछे जाना, हाँ तब आप college पढ़ते थे। और पीछे जाना, तो आप निक्कर पहनते थे। और पीछे जाना, तो माँ का दूध पीते थे। थोड़ा और पीछे जाना, माँ के गर्भ में...

जब स्त्री पुरुष का मिलन होता है, तो मिलन के समय पर, जो जीवात्मा प्रवेश करती है स्त्री के गर्भ में, उस समय न उसका हाथ होता है, न टांग होती है, न लिंग होता है। कुछ भी नहीं होता। जब स्त्री-पुरुष का मिलन होता है, उसके पाँच दिन बाद तो गुब्बारा बनता है, लिंग नहीं होता। हाथ-पांव नहीं होते। दस (१०) दिन बाद एक बेर की तरह बन जाता है। बेर..., बेर समझते हो? मांस का टुकड़ा, बेर जैसा, दस दिन के बाद होता है। महीने बाद उसमें से केवल सिर निकलता है। एक महीने बाद। आपको भूख नहीं लगी। आप बोलते हो न मैं तो unique हूँ, मुझे तो pizza अच्छा लगता है। unique हो? आपका सिर ही नहीं निकला था कई महीने तक तो। जब सिर निकल गया, तो मुँह तो कई महीनों बाद निकला था। आप बोलते हो न, मुझे तो स्त्री संग की ओर आकर्षण..., स्त्री संग? अरे! लिंग ही प्राप्त नहीं हुआ था आपको आसानी से तो। दो महीने बाद तो आपके हाथ और टांग आए थे।

श्रीमद्भागवत में यह शिक्षा दे रहे हैं भगवान् कपिल अपनी माँ देवहृति को। तीसरे स्कंध के तीस-इक्कत्तीसवें अध्याय में काफी शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। दो महीने बाद हाथ-पांव आए। हमारे! किसके? हमारे! तीन महीने बाद नाखून आए। ऐसे समझिए चर्म और लिंग इत्यादि के चिन्ह आए, लिंग नहीं आए। लिंग के चिन्ह आए..., तीन महीने बाद। पाँच महीने बाद भूख-प्यास लगनी शुरू हुई। आप बोलते हैं न, मुझे तो हमेशा बहुत..., मुझे

तो बहुत यह वाला taste अच्छा लगता है। जहाँ से आए हो वहीं पर वापस जाओ। तभी मुक्त होओगे। यह सारी उटपटांग diseases तुमने इकट्ठी कर ली हैं। माँ के गर्भ में थे, तब कोई disease था तुम्हें? तो अब क्यों है? Disease का मतलब क्या है? Original के ऊपर extra डाल देना, फलतू की चीज़ें। Original क्या हैं हम? शुद्ध आत्मा। शुद्ध आत्मा। शुद्ध आत्मा न स्त्री होती है, न पुरुष होती है। लिंगरहित होती है। बद्ध अवस्था में कोई सोचे कि मेरा लिंग है, मेरा gender है, तो यह सबसे बड़ी भ्रान्ति है। देहधारी जीव यदि यह समझे, कि मैं gender के साथ हूँ, यही भ्रान्ति है। Actually topic इतना सूक्ष्म है, इसको समझाना लगभग असंभव है। You think you are, what you are thinking..., you think you are..., आपको लगता है आप वही हो, जो सोच रहे हो परन्तु आप वो बिल्कुल नहीं हो, जो आप सोच रहे हो। आप किसी भी वक्त..., आत्मा में कोई uniqueness नहीं है, सभी चित्कण हैं। अभी आप conscious, चेतन हो गए हो किस रूप में? तरुण रूप में चेतन हो गए, तरुण भाव में चेतन। यह तरुण क्या है? एक concept है। Bundle of thoughts है तरुण। उस भाव में चेतन हो गए। कोई मानसी भाव से चेतन हो गया।

तो आत्मा को किसी न किसी..., अगर कार्य करना है, तो किसी न किसी भाव को प्रधान रख कर ही वह कार्य कर सकता है। तो जिस प्रकार से हम यह प्राकृत स्त्री या पुरुष का भाव रख कर..., हमारा लेना-देना नहीं है तरुण से, अमित से, किसी से भी। तो हम उस भाव के द्वारा जीवन जी रहे हैं पूरा। उसी प्रकार से अगर हम यह जीवन जी सकते हैं तो..., इसलिए बोला जाता है-

**"अतएव मंजरीभाव कोरि अंगीकार
रात्रिदिने चिंति राधाकृष्णर विहार।
सिद्ध देहे चिंति करि ताहाइ सेवन
सखी भावे पाय राधा कृष्णर घरण॥"**

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला ८.२२८-२२९)

तुमने कोई न कोई भाव को तो अंगीकार करना ही है। तरुण भाव, अरुण भाव..., कोई न कोई भाव को अंगीकार करना ही है। तो क्यों न अतएव मंजरी भाव करि अंगीकार, गोपीभाव करि अंगीकार। चेतन होना है। तो मंजरी भाव को चैतन्य में लाएँ, बजाए किसी और भाव के।

हम जो स्वयं के बारे में सोचते हैं, वह हम नहीं हैं। यह बात कैसे समझायी जाए, यह बहुत मुश्किल है समझना। पर यह समझे बिना गाढ़ी चलेगी नहीं। अपने आप को कुछ भी

सोचना मतलब, अहम करना और अंहकारी व्यक्ति कभी खुशी नहीं प्राप्त कर सकता। कभी कोई अहम, अहम egoistic व्यक्ति खुश हो सकता है? तो सारे हमने अहम डाले हुए हैं, कि मैं स्त्री हूँ। पीछे जाओ, कब-कब बने स्त्री तुम? और पिछले जन्म में क्या पता पुरुष थे। अपनी पत्नी को परेशान किया, इसलिए अब तुम स्त्री बन गए, पत्नी तुम्हें परेशान करेगी। तो लिंग कितना पुराना? हम identify कर रहे हैं किसी से, हैं नहीं।

आत्मा क्या है? निर्लिप्त है। लिप्त नहीं होती किसी चीज़ में। आप India में लिप्त हुए? तिलक नगर में लिप्त हुए? दिल्ली में लिप्त हुए? नहीं हुए न? इस घर में लिप्त हुए? नहीं हुए न? इस शरीर में क्यों अपने आप को लिप्त मान रहे हो? इसमें भी लिप्त नहीं हो। आत्मा निर्लिप्त है। मैं निर्लिप्त हूँ।

हमें सुख क्यों नहीं मिलता? क्योंकि हमने कभी सुख..., ईश्वर से हमने कभी सुख माँगा ही नहीं। तो हमें सुख मिलेगा कैसे? आप बोलोगे हम तो माँगते हैं। यहीं तो भ्रम है। आप ब्रह्म को मानो, आप भ्रम को माँगते हो। आपको लगता है आप सुख माँगते हो। क्या माँगते हो सुख? मेरे घर में मेरा पति मेरी बात माने, मेरे बच्चे मेरी बात मानें, सब धन, सब ठीक रहे। यह कौन माँग रहा है? आत्मा माँग रही है? आप माँग रहे हो? कौन माँग रहा है? यह तो पति..., पत्नी माँग रही है। अच्छा! वैसे पत्नी को कौन सा सुख मिलेगा? पत्नी का सुख मिलेगा। जो पत्नी का सुख है, वो मेरा सुख थोड़ी न है। यह बात अच्छी तरह समझिए, जो एक स्त्री का सुख है, वो आपका सुख नहीं हो सकता। अच्छी तरह समझ लो। जो किसी भी स्त्री का सुख है, वो आपका सुख नहीं हो सकता। जो किसी भी सास का सुख है, वो आपका सुख नहीं हो सकता। आप का सुख अलग है, सास का सुख अलग है। जो किसी बेटी का सुख है, वो आपका सुख नहीं हो सकता। यह कैसे शब्द दिए जाएँ इस बात को, यह तो अनुभूति का विषय है।

मेरा विषय अलग है, स्त्री gender का विषय अलग है। और सास, बेटी, बहू, पत्नी- ये सारे सुख जो हैं, स्त्री के सुख हैं। यदि स्त्री के सुख हैं, तो आपके सुख नहीं हो सकते किसी भी कीमत पर। और आप हमेशा भगवान् से क्या माँगते हो? यही माँगते हो। तो आप तो सुख माँग ही नहीं रहे, आप तो स्त्री के सुख माँग रहे हो और स्त्री के सुख मिल भी गए, तो भी आप तो खाली के खाली रहोगे। उसी प्रकार से पुरुष देह के जो लोग हैं, वे क्या माँगते हैं? मेरी पत्नी अनुकूल रहे। Obedient wife रहे। Dreams में ही रह सकते हैं! वास्तविकता तो ऐसा नहीं होता। Obedient wife...। पत्नी क्या चाहती है, obedient husband रहे। दोनों ही obedient चाहते हैं, सुख कहाँ से मिलेगा? दोनों का

ही ego इतना high है..., obedient, जैसे obedient dog चाहिए होता है, वैसे obedient रहे।

अहम आते ही, जैसे ही अहम प्रवेश करता है जीवन में, सुख तो उसी समय चला जाता है। सुख मुझे मिल सकता है। हमें अब कैसे सुख मिलेगा? जब से हम अपने आप..., स्वयं को पहचान पाए हैं, जो भी हमने अपनी identity बनाई है, उस identity को..., we should stop mothering all our identities, since we have come into existence..., जब से हम अपने आप को जान पाए हैं, अपने आप को जो भी मान रहे हैं, वह मानना अपने आप को बंद करना होगा। अपने आप को जो भी मान रहे हैं। क्योंकि आप जो भी मान रहे हैं, बिल्कुल गलत मान रहे हो। वो भ्रम है बिल्कुल।

ऐसा नहीं है, कि I am human being having Spiritual experiences..., ऐसा नहीं है। I am a Spiritual being, having human experiences ! I am a Spiritual being having human experiences. बोलते हैं न- मनुष्य है न, मनुष्य की तरह बात कर। मनुष्य नहीं है तू। तू चित्कण है। Conscious being. I am a particle of consciousness..., आत्मा। आत्मा बोलते हैं, तो समझ नहीं आता। आत्मा मतलब consciousness – चेतन, चेतना। आत्मा का gender नहीं होता जब तक मुक्त न हो जाए। Gender होने की हमारे अंदर क्या है? Potentiality है, potential है हमारे अंदर, कि हमें एक दिन gender प्राप्त हो सकता है, लिंग प्राप्त हो सकता है। पर है नहीं फिलहाल। Reality नहीं है अभी। लगता क्या है कि यह reality है, हाँ मैं तो पुरुष हूँ। न, यहीं तो गलतफ़हमी है। जब तक यह चेतना में रहेंगे, तब तक हम कभी भी खुश नहीं हो सकते। क्योंकि हमें पता ही नहीं है, मैं कौन हूँ। जो मान रहे हैं अपने आपको, गलत मान रहे हैं, सुबह से रात तक गलत मान रहे हैं। घर में बैठे हैं मैं तो कौन हूँ? घर में बैठे हो, तो सचिन, दुकान में बैठे हो, तो सचिन; और रास्ते में हो तो, तो सचिन। जब कि आप न दुकान में सचिन हो, न घर में सचिन हो, न रास्ते में। एक क्षण के लिए नहीं हो। और मान लो अगर आप का नाम ही न होता सचिन, तो आप क्या होते? आप तो nameless होते।

Just a bundle of thoughts हैं। किसी thought से कभी identify कर रहे हैं, कभी इन्द्रियाँ बन जाते हैं, कभी आँख बन जाते हैं, खुद को आँख मान लेते हैं, तो आँख का सुख चाहते हैं। कभी खुद को जित्वा मान लेते हैं, तो जित्वा का सुख चाहते हैं। कभी खुद को त्वचा मान लेते हैं, तो त्वचा का सुख चाहते हैं। आप हो क्या? आप decide कर लो once and for all, कि मैं हूँ क्या? Conflict free living. अगर इतना विवाद रहेगा,

यही मानने में कि मैं हूँ क्या, तो सुख कैसे प्राप्त होगा? किसको सुख प्राप्त होगा। हम यह decide करलें न, कि मैं क्या हूँ। अन्ततः, मैं हूँ क्या?

यह जो आप अपने को शीशे में देखते हैं, physical reality is not ultimate reality ! और जो अंदर बैठ कर भीतर देखते हैं, सोचते हैं मैं मन हूँ, मेरे ये thoughts हैं, ये मेरे thoughts चल रहे हैं,

*Mental reality is not ultimate reality!
Ultimate reality is only ultimate reality!*

क्या है ultimate reality? कि न मैं देह हूँ, न मैं मन हूँ, न मैं विचार हूँ। न मैं दिल्ली हूँ, न मैं India हूँ, न मैं पृथ्वी हूँ। मेरी दिल्ली..., मैं दिल्ली में हूँ, मेरी दिल्ली बोल सकते हो, मेरा भारत बोल सकते हो। उसके बाद मेरे विचार..., मैं विचार नहीं हूँ। मैं मन नहीं हूँ, मेरा मन है।

हम सब एक हैं। हम सबकी एक ही खुराक है, सबको एक ही चीज़ चाहिए। आनंद-भगवान्। सोचें, नहीं-नहीं मुझे तो factory चाहिए, नहीं-नहीं मझे तो मेरे बच्चे..., आपको ये नहीं..., आपको पता ही नहीं, आपको क्या चाहिए। आप भ्रम में हो। हम सबको एक ही चीज़ चाहिए चौबीस (२४) घण्टे। किसी की दूसरी desire है ही नहीं actually में। यह बात समझ नहीं रहे हैं। हमारी सबकी एक desire है हर समय। हम unique नहीं हैं।

*Please, Please, Please
समझ जाइए यह बात।
हम 'unique' नहीं हैं, नहीं हैं, नहीं हैं !
हम एक हैं सब।
मैं unique नहीं हूँ।*

अब एक Reynolds का pen है; उसको आप कुर्ते में डालो, तो भी यह Reynolds का pen है; उसको आप कमीज़ में डालो, तो भी यह Reynolds का pen है; उसको आप jacket में डालो, तो भी यह Reynolds का pen है। उसको आप pencil box में डाल दो, तो भी Reynolds का pen है। अलग-अलग pencil box में डालो, तो भी वो Reynolds का pen तो वही है न, या वो बदल जाएगा? उसी प्रकार से मैं आत्मा हूँ।

अलग-अलग geometry box में हैं। Hina का geometry box, hina geometry box, neena geometry box, nidhi geometry box, anil geometry box, amit..., यह सब geometry box के नाम हैं सिफ। हम सब वही Reynolds pen हैं। अब समझ आ रही है बात? मैं unique नहीं हूँ। कोई Reynolds का pen बोले, मैं unique हूँ, पागल है मैं भी वही हूँ। दूसरा बोले मैं भी वही हूँ। सभी वही हैं। Uniqueness नहीं है हममें। यह ego है जो हमेशा कहती है, तुम तो unique हो। तुम unique नहीं हो। फिर हम अपनी identity proof करते हैं दुनिया के सामने। Actually मैं न, मैं ऐसी नहीं हूँ, मैं तो ऐसी हूँ। अपनी बहू-सास के सामने, मैं ऐसी नहीं हूँ ऐसी। अरे! बहू और सास तुम दोनों ही एक जैसी हो। और मैं भी वही हूँ। और गुरुजी भी तुम्हारे वही हैं। सब चित्कण हैं। समझ रहे हो? मैं ऐसी..., तुम सभी निर्लिप्त हो। सभी शुद्ध आत्मा हो। तो तुम जो भी बोलना चाहते हो, तुम अपने आप को गलत समझ रहे हो।

मैं तो बड़ी honest हूँ। आत्मा होती ही honest है। मैं तो बड़ी सत्यवादी हूँ, यही prove करना चाहते हैं? आत्मा होती ही सत्यवादी है। तुमने अपने concepts बनाए हुए हैं, to prove, कि I'm this, I'm not this... Actually तुम जो मान रहे हो, कि I'm this, वो भी तुम गलत मान रहे हो और जो मान रहे हो, I'm not this, वो भी तुम गलत मान रहे हो। क्योंकि,

*You are nobody...
You are nobody and you have no buddy !*

तुम कुछ नहीं हो, तुम चित्कण हो। बस और कुछ नहीं। और तुम्हारी कुछ पहचान नहीं है। पहचान तुम्हारी गुरु देंगे तुम्हें, सिद्ध प्रणाली से, एकादश भाव से। You are nobody and you have no buddy ! तुम्हारा कोई buddy नहीं है। यह मेरी बीवी है, अरे! आत्मा की बीवी कब...? फिर वही झल मार रहे हो इतने सालों से आने के बाद भी? २००६ में भवित में आए उसके बाद भी..., २००७ की पहली जनवरी से अगला साल क्या गया? मैं फिर वही मानसी-तरुण-वरुण-विकास बन गया, अमित बन गया। २००७ में मैं फिर वही तरुण-विकास-अमित का जीवन जिया। फिर वही २००८ में, मैं फिर वही तरुण-विकास-अरुण-वरुण का जीवन जीया। फिर वही...!

अरे! भाई जब Spirituality की knowledge मिली है, तो जीवन तुरंत बदल जाना चाहिए। एकदम। एकदम। तुरंत। वो जीवन कैसे चल सकता है?

*I am not a human being having Spiritual experiences...
I am Spritiual being having stupid mansi and..., human experiences!*

मैं चित्कण हूँ। Just consciousness..., बस और कुछ नहीं। Just consciousness...!

एक बात बताओ, जब आप अपने आप को सपने में देखते हो, मानते हो क्या आप वो हो? सपना किस चीज़ से बना हुआ होता है? जैसे यह जगह है, यहाँ यह घर है, इसमें दीवार है..., है न? लकड़ी है, लोहा है, कागज़, पैसिल, पेन..., जिस चीज़ से यह reality बनी है, उस चीज़ से ही स्वप्न बना होता है, मालूम है? यह कैसे हो सकता है? ऐसे थोड़ी, स्वप्न में थोड़े न होता है ऐसे, आ रहा होगा मन में प्रश्न?

इसका उत्तर गीता में है।

**"पृथ्वीजलअग्नि वायुः स्वं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्ट्था॥"**

(गीता-७.४)

ये सब inferior energy हैं। सारी चीज़ें..., ये सबको inferior energy बोला गया है। मन, बुद्धि, अंहकार, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व आकाश। ये सारी inferior energy हैं। तो आपका सपना किस चीज़ से बना हुआ है? सत्तर (७०) मिनट का सपना जो आता है रात को, किससे बना होता है? इससे। यह सत्तर साल का सपना, यह किससे बना हुआ है? यह भी इससे।

**न आप physical reality हो, न mental reality हो।
आप तो reality हो।**

इस physical reality और mental reality को देखने वाली वास्तविक reality आप हो-चित्कण। आप physical नहीं हो, आप mental भी नहीं हो। आप light beam हो। Spiritual चित्कण। You are totally non-material form. Totally non-material form, चित्कण, Genderless, उपाधिरहित हूँ मैं। यही भक्ति, यही साधना करनी है, स्वयं को समझाना है -

**"सर्वोपाधिविनिमृतं तत्परत्वेन निर्मलम्।
हृषीकेण हृषीकेश सेवनं भक्तिरुच्यते॥"**
(श्री श्री वैतन्य चरितामृत मध्य लीला १९.१७०)

सर्वोपाधिकिनिमुक्तः- सब उपाधियों से रहित हो। तुम उपाधि तो छोडो, तुम लिंग से भी रहित हो। इस बात पर meditation करना है। We have to be..., we should..., aware होना चाहिए, कि मैं, भीतर सोचें मैं कौन हूँ, कौन हूँ! जहाँ से आए हो वहाँ वपिस जाओ। जैसे..., मैं वहाँ बैठा था..., ठीक है? बीच में था, अब यहाँ हूँ, मान लो यह सिद्धि है। वो तटस्था था, अभी आप वहाँ पर हो दरवाज़े पर, होना यहाँ पर है। यहाँ से यहाँ पर आ सकते हैं..., अभी क्या है, जहाँ पर भी हो, पहले यहाँ पर तटस्थ पर आना होगा। तटस्थ क्या होता है? कोरा कागज़। आप जो अपने आप की छवि बना लोगे, आप वो खुद..., और drawing भी खुद करनी है, चाहो तो सख्त बन जाओ भगवान् के, तो लिंग मिल जाएगा, सनातन लिंग मिल जाएगा, सनातन पहचान मिल जाएगी। चाहे तो सखी बन जाओ, चाहे तो मंजरी बन जाओ, चाहे तो वैकुण्ठ में भगवान् के दास बन जाओ, पर आना पड़ेगा तटस्थ लक्षण पर पहले। अभी तो आप पता नहीं कितनी मील दूर चले गए हो। अपने आप को पंजाबन, ४५ साल की बहू, बेटी और पता नहीं क्या-क्या मान के। मैं चित्कण हूँ। कोई uniqueness नहीं है मुझमें। 'I like levis, मुझे pizza'..., अरे! यह सब भ्रम है। और हम खुद ही मानते हैं कि मुझे..., सुख क्या होता है? अतेन्द्रिय सुख होता है। सुख कभी भी इन्द्रियों से प्राप्त होने वाली चीज़ को सुख नहीं बोला जाता, आनंद नहीं बोला जाता। सुख वास्तव में क्या होता है? अतेन्द्रिय। Beyond..., beyond senses...

*I am beyond everything.
I am beyond physicality!
I am beyond all mental set up !
I am beyond everything...
I am beyond material world !
I am beyond earth !
Beyond material universes...
मैं चित्कण हूँ।*

इस बात को समझे बिना, हम जितनी भी चेष्टाएँ करते रहेंगे, तो उससे सुख प्राप्त तो हो नहीं पाएगा।

हम यह सोचते हैं कि I have adopted Spirituality..., यह बोलते हैं न? Spiritual life मैंने अपनाई हुई है। तुमने Spiritual life नहीं अपनाई..., तुमने human life अपनाई हुई है। तुम तो हो ही Spiritual..., Spiritual life कोई अपनाने..., तुम तो हो ही Spiritual और क्या अपनाओगे? अपनाया तुमने human life को हुआ है। आप कभी Spiritual life

का..., आप हो ही Spirit..., आप क्या..., मैं actually यह..., मुझे समझ नहीं आ रहा कैसे मैं इन बातों को, शब्द कैसे ढूँ जो मैं कहना चाह रहा हूँ! यह..., अध्यात्मिक ज्ञान- अनिवार्यम् । यह शब्दों के परे है वास्तव में। हमें अपनी इस स्थिति में गम्भीर चिंतन करना होगा- 'मैं हूँ कौन'..., आखिर मैं..., आनंद किसको देना चाहता हूँ? दिन-रात पति को आनंद दे रहे हैं, पुरुष। दिन-रात भाई को आनंद दे रहे हो..., भाई बन के आनंद।

इस बात को समझिएगा बहुत गम्भीर बात है। हम अपने आप को देह मानते हैं यहाँ पर और भावना करते हैं कोई, ठीक है? और इससे सुखी होना चाहते हैं। आ रही है समझ बात? सुखी होने का यह formula नहीं है। सुखी होने का formula गोलोक में क्या है? अपने आप को हम एक भावना मानते हैं, 'मंजरी भाव' अंगीकार करते हैं और उससे देह प्राप्त होता है। तो center क्या होता है आध्यात्म में? भावना। मंजरी भाव वो center है। देह प्राप्ति तो बाद की बात है। सबसे main प्राप्ति क्या है पहले? मंजरी भाव की प्राप्ति। उससे आपको आनंद मिलता रहता है। यहाँ पर हम देह मान कर भावना करते हैं; वहाँ भावना मानते हैं, तो देह मिलता है। वहाँ देह के आधार पर सुख नहीं है, भावना के आधार पर सुख है। यहाँ पर हम देह के आधार पर सुख चाहते हैं। आप समझ रहे हैं difference? वहाँ पर भावना की कामना की और देह मिल गया। यहाँ पर देह सोचा और उसके बाद हिसाब से भावना की कामना कर ली। ये deep तत्वों पर जब हम गंभीर-गंभीर चिंतन नहीं करेंगे..., अब जैसे हम अपने आप को पुरुष मानते हैं और पुरुष की खुराक ही देते रहें..., मान लो स्त्री चिंतन करें या कुछ भी, तो अग्नि में और धी डालने से क्या होगा? अग्नि शांत तो होगी नहीं कभी भी, और पुरुषपना बढ़ता ही रहेगा।

जहाँ से आए हैं, बारम्बार, रोज़, घण्टे में दस बार, अपने आप को याद दिलाना पड़ेगा 'मैं कौन हूँ'।

वास्तविकता क्या है? कि मैं चित्कण हूँ। मैं चेतना का..., जो मेरी consciousness है, वह समुद के समान है और समुद के अंदर अलग-अलग..., जैसे मान लो लहर आती रहती है, तो बस मैं उस thought का आना, मतलब thought की पृति में लग जाता हूँ, अपने आप को भूल जाता हूँ। जैसे for example- एक व्यक्ति का मन है कि वो Restaurant का, उसने शाही पनीर खाना है। ठीक है? तो सबसे पहले वह घर से जाएगा Restaurant... Restaurant में जाकर वह शाही पनीर खाएगा, उसके बाद उसको लगेगा वह सुखी हो गया। जबकि देखा जाए, तो पहले भी वैसे ही सुखी था वह। अगर वो thought आया ही न होता, तो उसको पृति करने का वह प्रयास ही न करता और

पूर्ति करके सुख..., जो so-called सुख है उसे वो भी..., उसकी ज़रूरत ही नहीं थी। आप समझ रहे हैं इस बात को? तो हुआ क्या? Thought उत्पन्न हुआ, thought की पूर्ति करने में लग गए। मैं तो picture में ही नहीं आया। जैसे कि मेरे मन में आया कि मैं..., Zen लैं, और Zen को अच्छी तरह कपड़े मार कर साफ कर दूँ, तो बस यह केवल विचार है। आपने कर भी दिया, तो क्या आप सुखी होओगे उसमें क्या? आप तो Zen नहीं हो; आप Zen के साथ कुछ भी करते रहो। उसी प्रकार से आप thought नहीं हो। आप विचार नहीं हो, आप विचार के साथ कुछ भी करो। तो विचार की पूर्ति, चाहे वो सास का विचार हो, चाहे स्त्री का विचार हो, चाहे खाने का विचार हो। जो सुख की अनुभूति होती है न, कहते हो कि क्या होता है, कई लोग मेरे से पूछते हैं भई यह तुम्हारे को प्राप्त क्या होता है..., जब हम खाना खाते हैं या कोई भी चीज़..., वह प्राप्त कुछ नहीं होता, वो जो तुम्हारी मन की चंचलता आई होती है..., वह जब चंचलता थम जाती है, तो थोड़ी goodness होती है। उसी goodness को ही सुख..., वो goodness की स्थिति ही, वास्तव में सुख की सबसे highest स्थिति है इस material world में। जब passion चला जाता है, रजोगुण और तमोगुण चला जाता है तो goodness..., goodness होती है, मतलब की desireless होते हैं न थोड़ी देर के लिए, मैंने खा लिया, तो थोड़ी देर के लिए निवृत्त हो गया। बस, वो शांति की स्थिति को, हम सुख मान बैठते हैं। वास्तव में दुःख निवृत्ति..., दुःख भी नहीं था, पहले desire किया,

"विषय गरलमय, ताते मानो सुखचय
 सेई सुख-दुख करि मान।
 गोविन्द-विषय रस, संग करो तार दास
 प्रेमभक्ति सत्य करि जान॥"
 (श्री श्री प्रेमभक्तिचन्दिका ८२- श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

बोला है नरोत्तम दास ठाकुर ने? इसी सुख को दुःख मानो, क्योंकि तुमने इसकी पूर्ति के लिए पूरा कितना प्रयास किया और अन्त में अपने आप सुख मान लिया। यही गीता, श्रीमद् भागवतम् में बताया गया है-

"गृहेषु कृटधर्मेषु दुःखतन्त्रेष्वतन्दितः।
 कुर्वन्दुःखप्रतीकारं सुखवत मन्यते गृही॥"
 (श्रीमद् भागवतम्-३.३०.९)

ऐसे ही गृहस्थ व्यक्ति अपने आप को सुखी मान लेता है, सुखी मान लेता है। जैसे गृहस्थ व्यक्ति जो होता है..., आपको एक प्रश्न पूछूँ? जैसे चिड़िया है, वो अगर अपना घोंसला बना ले और बच्चों के लिए खाना लेकर आ जाए और इससे अपने आपको सुखी मान ले, तो क्या वह ठीक है क्या? नहीं है न? उसी तरह से चिड़िया अपने बच्चों को खाना देकर सुखी मान ले, हम उसको बेवकूफी मानते हैं, तो हमें कौन अकलमंद कहेगा? मैंने घर बना लिया, बच्चों को खाना दे दिया और अपने आप को सुखी मान लिया। तो यही श्रीमद्भागवतम् में बताया गया है- 'सुखवत् मन्यते गृही'। सुखवत् मान लेते हैं, है नहीं वो सुख की स्थिति। सुखवत् मन्यते- मान लेना- गृही। पहले तो अपने आप को गृही मानना गलत है। फिर गृही की कोई problem को solve करके अपने आप को सुखी मान लो, उससे भी बड़ी गलती है।

अब कोई बोलता है कि- हमें मुक्ति चाहिए। आपको किस चीज़ से मुक्ति चाहिए, यही बता दो आप। सारे problem का समाधान आप खुद ही कर लो..., आपको किस चीज़ से मुक्ति चाहिए? और आपको मुक्ति क्यों चाहिए? तरुण जी मुक्ति क्यों चाहिए? तो आप तरुण रहकर खुश नहीं हो न..., सीधी सी philosophy है। तो आपको तरुण से मुक्ति चाहिए। किससे मुक्ति? बंधन से..., क्या बंधन है? तरुण। इसलिए जिस रास्ते से आए हो, ठीक उस रास्ते से वापिस जाओ। फिर उसके बाद सही भाव को अंगीकार करो। अपना सनातन पहचान को अंगीकार करो। हमारा सबका जीवन कोरा जीवन है, हमने उसको कोई न कोई रंग देकर भरा हुआ है। किसी ने अपने आपको माँ का रंग देकर भरा हुआ है, कि मैं माँ बन गई। मैं चित्कण हूँ बस। अपने आप को माँ के स्प में चैतन्य अनुभूति कर रही हूँ।

हम अपने आप को जो भी मानते हैं..., जैसे मान लीजिए पुरुष, माँ मानते हैं या बेटी मानते हैं, don't be solid in your opinions... Don't be solid in your opinions, be liquid in your opinions. इतना solid मत हो जाओ। मैं तो definitely यही हूँ। आप definitely यह नहीं हो। जो भी अपने आप को मानते हो, आप definitely वो नहीं हो। स्वयं को जानें, स्वयं को पहचानें, स्वयं के स्वस्प पर गंभीर-गंभीर-गंभीर चिन्तन करें।

तो मन में प्रश्न आएगा, कि क्या मैं सब छोड़ दूँ क्या, इसका मतलब? कोई बोले, 'स्वामीजी छोड़ दें क्या सब कुछ?' अरे जो है, उसे नहीं छोड़ना आपने! You are going to be a husband as per prārabdha but don't be- as a husband. You are going to be a husband, but don't be- as a husband. समझ रहे हो बात को? You are going to be a husband anyway, but don't be as a husband.

*You are going to be a mother anyway!
But don't be, behave as a mother.
You are going to be a mother anyway!*

अपनी पहचान, जो अपनी खुद की बनाए हुए है, उसमें संशोधन करें। इस बात पर गंभीर-गंभीर चिन्तन करें, कि जो एक स्त्री का सुख है, वो मेरा सुख नहीं हो सकता। अगर कोई पुरुष का सुख है, तो वो मेरा सुख नहीं हो सकता। अगर कोई पुरुष का सुख है, वो मेरा सुख नहीं हो सकता। मेरा सुख स्त्री और पुरुष के सुख से बहुत परे की वस्तु है। सुख अतेन्द्रिय है। यह स्त्री-पुरुष जो भी चीज़ है, यह एक भ्रांति है। जैसे एक projector होता है..., projector में मान लो किसी ने mickey mouse की photo बच्चे ने डाली, उसको पता है mickey mouse ही डाल रहा है और mickey mouse ही सामने आ जाएगी और जैसे ही सामने आ जाए तो वह (starts to clap...) खुश होना शुरू हो जाएगा। तो आप क्या कहांगे? ऐसे सुख मिल रहा है बच्चे को? तो अपने आप पहले मैंने एक conception बनाई और अगर वही चीज़ सामने आ जाए, तो (clap...) मैं सुखी अपने आप को मानने..., मन्यते गृही। सुखवत् मन्यते गृही। और जो मैंने अपने आप को माना, मान लो mickey mouse की photo डाली, तो यहाँ तो projector में जो डालोगे वो सामने आएगा..., पर यह material world में ऐसा नहीं है। जो आप इच्छा करोगे, हो सकता है वो सामने आए, हो सकता है सामने..., अगर वह सामने नहीं आया, तो मैं दुःखी। जो विचार मैंने डाला, वो वाला आ गया, तो मैं सुखी। और वही projector में मैंने डाला और वो वाला नहीं आया, तो दुःखी। यह है हमारी कहानी जीवन की। आपने अपने अंदर डाला शाही पनीर और आ गया..., क्या था वह? घिया। तो आप सुखी नहीं हो। Projector में डाला था न आपने। जब कि आपकी..., जीव की उत्पत्ति तो ३ महीने बाद हुई थी गर्भ में आने के भी।

हमारी इतनी बुरी हालत है, शब्द नहीं हैं व्याख्यान करने के लिए। हम अपने आप को क्या समझ बैठे हैं। आप सोच सकते हैं? बच्चा projector में जो मन करे डाले और वही सामने आए, वो देखकर ताली मारे, नहीं तो रोना शुरू कर दे। कहेंगे बेटा क्यों कर रहा है..., ताली क्यों बजा रहा है? और अगर नहीं डाले, तो वह वैसे ही सुखी था। डाल के बस खेल रहा है, आएगा तो सुखी होगा, नहीं तो सुखी नहीं।

अब जैसे एक ने अपने अंदर slide डाली मेरी पत्नी..., सबके अंदर, पति के अंदर slide होती है- 'मेरी पत्नी obedient पत्नी हो।' वह सामने नहीं आएगी तो? तब मैं दुःखी हो रहा हूँ, भिन्न-भिन्न प्रकार की चेष्टा करूँगा obedient बनाने के लिए। आप यह याद

नहीं रख रहे, जो आपकी पत्नी है, उसने भी एक slide डाली हुई है, कि obedient पति हो। तो वह भी चेष्टा ऐ ऐसी कर रही है, आप भी चेष्टा ऐसी ही कर रहे हो। तो क्या होगा? Clash-clash-clash..., परंतु गोलोक में ऐसा नहीं है। सबकी चेष्टा क्या है? कृष्ण को प्रसन्न करना। A to Z सब। सब। सभी गोपियाँ, सभी सखा, सभी मंजरी, सभी जो वृद्ध गोपियाँ हैं, सभी दास-दासियाँ..., सबका एक ही चेतना है, केवल कृष्ण को सुखी करना। Clash का कोई प्रश्न ही नहीं है। सब अपनी..., किससे सुख करना चाहते हैं? अपनी देह से सुख करना चाहते हैं कृष्ण को? भावना से।

**"मूर्खोऽवदति विष्णाय, धीरोऽवदति विष्णवे।
उभयोस्तु समर्पुण्यं, भाव-ग्रही जनादनः ॥"**

(श्री चैतन्य भागवत्, आदि खण्ड-११.१०८)

तो देह तो एक यंत्र बन जाता है सुख देने का। पर वे सुखी करना चाहते हैं, भावना से। रोज़ अपने आप को याद दिलाएँ, नया साल अगर वास्तव में नया हो, कुछ नया जीवन में लाना चाहते हैं।

इस बात को अच्छी तरह याद दिलाएँ-

'मैं चित्कृण हूँ।'
Conscious being हूँ।

Actually मैं, you are not required to run yourself. आपकी ज़रूरत नहीं है, आपको run करने के लिए। वो प्रारब्ध, वैसे ही run कर लेगा। आपके प्रारब्ध में जितनी श्वास लिखी हैं, वो run हो जाएँगी, बिना आपको, अपने आपको आप माने। आप के पुत्र भी रहेंगे, business भी रहेगा, सब कुछ अच्छी तरह रहेगा। अपने आप को आप नहीं मानोगे, तब भी यह रहेगा। आपको और उदाहरण देता हूँ। आप लोग कहोगे, कैसे run कर रहा हूँ, माने न कुछ भी क्या? देखो, आप घर से दफ्तर जाते हो, १२ किलोमीटर दूर दफ्तर है, क्या अपने आप को हर समय याद दिलाते हो- first gear डालो, second gear डालो, neutral से होते हुए जाना चाहिए, याद रखो। Fourth gear डालो, red light आए, रुको। पुलिस वाला आए, फोन नीचे रखो। अपने आप को याद दिलाते हो क्या? नहीं..., आप क्या करते हो? यह तो casual चले जा रहे हैं। यह तो चलता ही रहेगा। Habitual है, और आप साथ में क्या कर रहे हो? Lecture सुन रहे हो। क्या कर रहे हो? फोन पर बात कर रहे हो। तो ये प्रारब्ध वाले काम तो होते ही रहेंगे। वैसी ही अपना..., material life वैसे ही चलना चाहिए। आपको मानने की ज़रूरत नहीं है, कि मैं

अब driver हूँ, मैंने ऐसे car..., सोचो आप verbal translation करते हुए एक-एक activity की car चलाने की..., आप पागल हो जाओगे। ये गतिविधियाँ तो कैसे ही हो जाएँगी। और आप क्या हैं, अपने अंदर business की planning कर रहे होते हो, जब गाड़ी में जा रहे हो, कि आज यह मैंने उसको यह माल बेचना है। उसी प्रकार से आप कुछ भी कर रहे हो, पत्नी की duty कर रहे हो, पति की..., अपनी भावना जो मंजरी भाव..., उसी का चिंतन निरन्तर करते रहें। सेवा का चिंतन निरन्तर करते रहें। ये काम तो प्रारब्धवश हो ही जाएँगे। यह आपको प्राप्त होगा ही होगा। इसमें आपको businessman मानने की..., करो business, पर मानो नहीं। रहोगे husband और wife, पर मानो नहीं, कि मैं यह हूँ। रहोगे तो वही। करोगे भी सही स्पष्ट से काम और खुशी भी रहेगी।

जब हमने अपने आपको, जब हम अपने आपको ego-वश मानते हैं पति या पत्नी, तो हम अपने spouse के ऊपर अहिंसा करते हैं, exploit करना। मानते हैं मतलब, कि हम उसकी पूर्ति चाहते हैं। पति हो, तो मेरी सारी बात मानी जाए, मेरे अनुसार सब कुछ हो, मैं आऊँ तो यूँ-यूँ करे। Sunday को मेरी खुशामद करो..., यही सब चाहते हैं। तो अहिंसा..., जैसे ही अपने आपको ego मानते हैं, तो अहिंसा करनी शुरू कर देते हैं। उससे कभी सुख नहीं मिलता। अहिंसा करके किसी को सुख मिलेगा क्या? खुद सोचिए। एक हिंसक व्यक्ति सुखी हो सकता है क्या? अपने आपको जैसे ही कुछ भी ego माना, कि मैं पति हूँ, हल्का सा भी पति मान लिया या हल्की सी भी पत्नी मान लिया, सुख नहीं मिलेगा और कुछ भी मिल जाए। हो सकता है पत्नी उठक-बैठक करे आपके अनुसार, यह हो सकता है। पर सुख आपको नहीं मिलेगा, यह पक्की बात है। हिंसक व्यक्ति को सुख नहीं मिल सकता, जो अहिंसा करता है। जैसे ही अपने आपको हल्का सा भी कुछ माना, मैं सास हूँ, हो गई start हिंसा। अगर आप सास हो, आप चाहोगे आपकी वह उठक-बैठक करे। तो कृपया हिंसा न करें। वास्तव में हिंसा जो है, वो औरों पर तो करने के अलावा, सबसे पहले किस पर करते हैं? स्वयं पर। जब स्वयं पर हिंसा कर रहे हैं, तो स्वयं को सुख नहीं मिल रहा; जो साथ रह रहे हैं, वह भी कभी सुखी नहीं होगा। और अहम-वश हम चाहते हैं हमें सुख मिल जाए।

**"प्रकृते: क्रियमाणानि गुणैः कर्मणि सर्वशः ।
अहंकार विमूढात्मा कर्तहिमिति मन्यते ॥"**

(गीता-3.27)

मैं अपने को अहम मानकर, कर्ता मानकर, सुखी होना चाहता हूँ। जबकि क्या है कि,

*I am particle of service...
I am just consciousness...*

ठीक है। इस संबंध में कोई जिज्ञासा करना चाहते हैं, तो कर सकते हैं।